पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.06.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

हार्दिक बधाई

श्री अनिल आर्य के संपादन में

युवा उद्घोष

पत्रिका का

41वे वर्ष में प्रवेश

आर्य जनता का धन्यवाद!

वर्ष-41 अंक-01 ज्येष्ठ-2081 दयानन्दाब्द 201 01 जून से 15 जून 2024 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.06.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

नोएडा चलो आर्य युवा शक्ति को आशीर्वाद देने

शिक्षाविद **डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान** के सान्निध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

"भव्य समापन समारोह"

रविवार 9 जून 2024, प्रातः 11 से 1.00 बजे तक

स्थानः एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर 44, नोएडा

मुख्य अतिथिः डॉ. महेश शर्मा (संसद सदस्य)

विशेष आकर्षण— आर्य युवको द्वारा व्यायाम प्रदर्शन के आकर्षक कार्यक्रम होंगे

ऋषि लंगरः दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक

निवेदकः

आनंद चौहान, संरक्षक, **प्रि. रेणु सिंह,** स्वागत अध्यक्ष, **अनिल आर्य,** राष्ट्रीय अध्यक्ष,
महेन्द्र भाई, महामंत्री, **धर्मपाल आर्य**, कोषाध्यक्ष, **सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य**, प्रबन्धक

तपोवन आश्रम देहादून का उत्सव सम्पन्न

गायत्री मंत्र पढ़ने से महिलाओं को रोकने वालों पर कानूनी कार्यवाही हो —स्वामी आर्यवेश जी

देहरादून,रविवार, 19 मई 2024, वैदिक साधन आश्रम तपोवन का पंच दिवसीय ग्रीष्मोत्सव, 75वां स्थापना दिवस एवं संस्थापक बावा गुरमुख सिंह का स्मृति दिवस योग, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन के द्वारा हर्षोल्लास से संपन्न हुआ। समापन सत्र में सैकड़ों ऋषिभक्तों की उपस्थिति में प्रातः आश्रम की भव्य एवं दिव्य यज्ञशाला में यज्ञ करके आरम्भ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के विख्यात् विद्वान् आचार्य पं. विष्णु मित्र वेदार्थी थे। यज्ञ में मंत्रोच्चार देहरादून स्थित प्रसिद्ध गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। मुख्य यज्ञमान सर्वश्री विजय कुमार आर्य,केशव आर्य, विनैश आहूजा रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विष्णु मित्र वेदार्थी ने अपने उपदेश वचनों से यज्ञकर्ताओं एवं श्रोताओं को उपकृत किया उन्होंने आजीवन यज्ञों के लिए संकल्पित हुए यज्ञमानो को यज्ञोपवीत धारण कराया और पंच यज्ञों को करने की प्रेरणा दी। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प. कुलदीप आर्य,रमेश चन्द स्नेही एवं मीनाक्षी पंवार, रामकुमार पुंजानी आदि के ईश भक्ति,देश भक्ति के गीतों को सुनकर श्रोता झूम उठे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश ने कहा हमें बुद्धि के लिए प्रभु से गायत्री मंत्र द्वारा प्रार्थना करनी चाहिए। जिन लोगों की बुद्धि सात्विक होती है वह निरंतर ऊंचाइयों की और बढ़ते हैं। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सोमदेव शतांशु, विधायक उमेश शर्मा, आर्ष कन्या गुरुकुल द्रोण स्थली की डा. अन्नपूर्णा आचार्या, आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, महात्मा चित्तेश्वरानन्द, सर्वश्री स्वामी योगेश्वरा नन्द,आर्यमुनि,देव शर्मा विद्यालंकार, सोमदेव वेदालंकर, आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, सत्यवृत्त एवं इंदू बाला आदि ने भी अपने विचार रखे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य, अरुण आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, सोनिया संजू, रोहित कुमार आदि के नेतृत्व में दो बस भरकर 125 आर्य ज़न दिल्ली से पहुचे और रौनक लगा दी।

वेद और आर्यसमाज देश व समाज की प्रमुख सम्पत्ति व शक्ति हैं

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज का अस्तित्व वेद पर आधारित है। वेद ईश्वरीय ज्ञान और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ज्ञान व विज्ञान से युक्त व इनके सर्वथा अनुकूल है। वेद विद्या के ग्रन्थ हैं। वेद में अन्य ग्रन्थों के समान, कहानी किस्से व किसी आचार्य व मत प्रवर्तक के उपदेश नहीं हैं अपितु वेदों में इस जगत के रचयिता परमेश्वर के मनुष्यों की सर्वांगीण उन्नति करने सहित उसे दुःखों से सर्वथा मुक्त कर मोक्ष प्रदान करने वाली शिक्षायें एवं उपदेश हैं। परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में जब मनुष्यों को उत्पन्न किया तो उन्हें कर्तव्य व अकर्तव्य का बोध कराने के लिये चार वेदों का ज्ञान दिया था। यदि परमात्मा ऐसा न करता तो मनुष्य न तो भाषा को उत्पन्न कर सकते थे और न ही सत्यासत्य का निर्णय कर सकते थे। परमात्मा ने मनुष्यों व सभी प्राणियों के शरीरों को बनाया है। मनुष्य आज तक इतना सक्षम व समर्थ नहीं हुआ कि वह मानव व प्राणी शरीर तो क्या, अपने व दूसरों के शरीर का एक अंग व प्रत्यंग ही बना सके। इसी प्रकार से परमात्मा प्रदत्त बुद्धि को ज्ञान को प्रदान करने वाली भाषा व सद्ज्ञान भी परमात्मा ही देता है। मनुष्य का काम केवल परमात्मा की भाषा व ज्ञान को समझना व उससे उपकार लेना है। वह न तो वेदों की भाषा को और न उसके समान किसी अन्य भाषा को बना सकता है और न इस सृष्टि के बनाने व इसमें जीवन व्यतीत करने की जो आदर्श जीवन पद्धति है, उसका ही निर्माण कर सकता है। यह सब वस्तुयें व ज्ञान आदि उसे परमात्मा से सृष्टि के आरम्भ में ही प्राप्त हुईं थी। वेद की शिक्षाओं को जानना व उसके अनुरूप आचरण करना ही मनुष्य का कर्तव्य व धर्म है। इससे दूर होने पर मनुष्य अनेक विकृत विचारों, अज्ञान व मिथ्या मान्यताओं में फंस जाता है। वह अज्ञान व स्वार्थों के वशीभूत होकर सत्य से दूर जाकर सत्य को ही स्वीकार करना छोड़ देता है। वह अपने व अपने पूर्व आचार्यों के मार्गों को ही सबसे उत्तम व लाभप्रद मानकर उनका अविवेकपूर्वक समर्थन व व्यवहार करता है। ऐसा ही हमें इतिहास में देखने को मिलता है। मनुष्य की बुद्धि पवित्र हो तभी वह सत्कर्मों को करने में प्रवृत्त होता है अन्यथा वह अपने जीवन में परम्परा से प्राप्त सत्य व असत्य परम्पराओं को ही अपने ऊपर ओढ़कर बिना सत्य व असत्य का विचार किये उन्हीं का निर्वहन करता रहता है।

एक सामान्य व्यक्ति जो मत–मतान्तरों की सत्यासत्ययुक्त शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करता है वह वेदों के महत्व को तब तक नहीं समझ सकता जब तक की वह पक्षपातरहित व शुद्ध मन व प्रवृत्तियों वाला न हो। जब तक मनुष्य में अपने मत के प्रति आग्रह व दुराग्रह होता है, वह इतर मतों के सत्य व अधिक महत्वपूर्ण ज्ञान व विवेकपूर्ण बातों को स्वीकार करने की सामर्थ्य नहीं रखता। सत्य को यदि स्वीकार करना हो तो मनुष्य को योग की शरण में जाकर यम व नियमों का पालन कर अपने जीवन को सत्य व शुद्ध विचारों से युक्त करना होता है। ऋषि दयानन्द वेदज्ञान को इसलिये प्राप्त कर सके क्योंकि उनमें सत्य को जानने के प्रति तीव्र भावना व इच्छा शक्ति थी। वह किसी भी बात को बिना परीक्षा किये स्वीकार नहीं करते थे। मूर्तिपूजा को वह इसलिये स्वीकार नहीं करते थे कि मूर्ति में ईश्वर के समान चेतनता, ज्ञान, सामर्थ्य, जीवों वा प्राणियों को सुख प्रदान करना, मनुष्यों को सद्प्रेरणा करना आदि जैसी बातों का अभाव होता है। मूर्ति तो अपने वस्त्र भी नहीं बदल शक्ति और न ही हिलडुल सकती है। इस कारण ऋषि दयानन्द को मूर्ति की शक्तियों में सन्देह हो गया था जिसे उस समय के मूर्तिपूजा करने वाले विद्वान उन्हें समझा नहीं सके थे। इससे उनमें सत्य ज्ञान की प्राप्ति का भाव व संकल्प उत्पन्न हुआ था। इस विचार व भावना ने ही उन्हें सच्चा जिज्ञासु तथा सत्यान्वेषी बनाया था।

अपनी आयु के 22वें वर्ष में ऋषि दयानन्द धार्मिक विद्वानों की संगति को प्राप्त हुए। उनसे उन्होंने धर्म वा अध्यात्म विषयक ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने उस प्राप्त ज्ञान की विवेचना की। सत्य व बुद्धिसंगत बातों को उन्होंने स्वीकार किया और तर्क व प्रमाणहीन बातों को छोड़ दिया। वह योगियों के सम्पर्क में भी आये। उनसे योग की क्रियायें सीखी। उनका योग केवल आसन व प्राणायाम तक सीमित नहीं था अपितु योग के सातवें व आठवें अंग ध्यान व समाधि का भी उन्होंने सफल अभ्यास किया था। समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार होता है। इस स्थिति को भी उन्होंने प्राप्त किया था। इस प्रकार समाधि अवस्था में पहुंच कर उनकी बुद्धि सर्वथा निर्मल व पवित्र हो गई थी। इस बुद्धि से ही उन्होंने वेद व संसार के अन्य सभी ग्रन्थों की परीक्षा की। वह संस्कृत के अद्वितीय विद्वान थे। वह संस्कृत में धाराप्रवाह भाषण करते थे। प्रत्येक गूढ़ व गूढ़तम विषयों को भी उन्होंने विचार कर उनका सत्यस्वरूप जाना था जिसका उल्लेख व वर्णन उन्होंने अपने विश्व विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में किया है। ऋषि दयानन्द राग व द्वेष से बहुत ऊपर उठे हुए थे। वह संसार के किसी एक मत के आग्रही नहीं थे अपितु तर्क व युक्तियों से सिद्ध तथा प्राकृतिक नियमों के सर्वथानुकूल ज्ञान को ही वह सत्य स्वीकार करते थे। उनसे पूर्व उन जैसा सच्चा जिज्ञासु व शोधकर्ता विद्वान नहीं हुआ। इसी कारण वह अपनी सत्य–असत्य की परीक्षा करने में समर्थ बुद्धि से सब उपलब्ध धर्म, मत व पन्थ के ग्रन्थों की परीक्षा कर सबकी वास्तविकता को जानकर वेद तक जा पहुंचे थे। वेद ही उन्हें पूर्ण सत्य प्रतीत व सिद्ध हुए थे और उसमें ईश्वर प्रदत्त अपौरूषेय ज्ञान का साक्षात् हुआ था। उसे प्राप्त कर ही उन्होंने अपने गुरु व ईश्वर की आज्ञा से वेदों के सत्य व मानवमात्र के हितकारी स्वरूप व शिक्षाओं को देश व समाज में प्रचारित किया था।

महाभारत युद्ध के समय तक समस्त संसार का एक ही धर्म ग्रन्थ था और वह था वेद। वेदानुकूल ग्रन्थ भी समान रूप से मान्य होते हैं। वेद सूर्य के समान स्वतः प्रमाण और अन्य ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर परतः प्रमाण होते हैं। यह सिद्धान्त ऋषि दयानन्द ने दिया है जो कि उनकी एक बहुत बड़ी देन है। वेदों का अध्ययन व तदनुरूप आचरण करने से मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास व उन्नति होती है। वेदों का अध्ययन करने वाला मनुष्य ईश्वर, आत्मा व सृष्टि के सत्यस्वरूप को जानता है। आत्मा वा मनुष्य जीवन के उद्देश्य को भी जानता है। वह उपासना से ईश्वर को अपनी आत्मा व बाहर सर्वत्र जानता वा देखता है। ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना से वह ईश्वर का सहाय प्राप्त करता है। ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए वह जीवन व्यतीत करता है। सद्कर्म एवं परोपकार के कार्य करना ही उसके जीवन का उद्देश्य होता है। वह अल्पाहार करता है। शुद्ध शाकाहारी अन्न सहित गोदुग्ध एवं फलों का सेवन करता है। वेद व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर सत्य को प्राप्त होता है तथा लेखन व उपदेशों से अज्ञानी व जिज्ञासु लोगों को ज्ञान प्रदान करता है। वह सुख–सुविधाओं व विलासिता से रहित तप व पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करता है। वह जानता है कि मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र देवयज्ञ, माता–पिता की निष्ठापूर्वक सेवा व सम्मान, विद्वान अतिथियों का श्रद्धापूर्वक आतिथ्य तथा पशु–पक्षियों आदि सभी प्राणियों के प्रति सद्भावना रखते हुए उनके जीवन यापन में साधक होना, बाधक न होना, इन कर्तव्यों का पालन वेदों का अध्ययन करने वाला मनुष्य करता है। वह अपने देश के प्रति निष्ठावान रहता है। विदेशी शक्तियों से मिलने वाले अकर्तव्य श्रेणी के प्रलोभनों को अस्वीकार करता है। देश के लिये वह अपना सर्वोपरि बलिदान तक कर देता है। ऐसे मनुष्यों का जीवन ईश्वर की भक्ति सहित परोपकार के कार्यों में व्यतीत होता है। इसी कारण से वेदों का महत्व है।

वेदों की इस महत्ता के कारण ही ऋषि दयानन्द के लिये वेद प्रचार करना आवश्यक था। लोग वेदों को भूल चुके थे। वेदों का स्थान अविश्वसनीय एवं वेदविरुद्ध मान्यताओं के ग्रन्थों, जो परस्पर विरुद्ध भी हैं, उन पुराणों एवं मत–मतान्तरों के ग्रन्थों ने ले लिया था। उपासना का स्थान अज्ञान व अंधविश्वासों से युक्त मूर्तिपूजा, नदियों में स्नान तथा अनेक तीर्थों के गमन आदि ने ले लिया था। मनुष्यों व उनकी आत्मा की उन्नति के लिए इन अवैदिक कृत्यों में निहित अविद्या व अन्धविश्वासों का खण्डन करना आवश्यक था। अतः वेदों के प्रचार, अविद्या का नाश, अन्धविश्वासों तथा मिथ्या सामाजिक परम्पराओं के उन्मूलन सहित देश का सर्वविध सुधार व देश को स्वतन्त्र कराने की दृष्टि को सम्मुख रखकर ऋषि दयानन्द ने दिनांक 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार कर वेदों की रक्षा करना, अपने धर्म बन्धुओं आर्य हिन्दुओं को अन्धविश्वास व मिथ्या परम्पराओं से छुड़ाकर उन्हें वेद व वेदानुकूल परम्पराओं को स्वीकार कराने के लिये किया जाने वाला एक आन्दोलन है। देश से अविद्या व अशिक्षा दूर करने में भी आर्यसमाज ने दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कालेज तथा वेद विद्या के अध्ययन अध्यापन के लिये गुरुकुलों की स्थापना कर एक प्रभावशाली आन्दोलन को जन्म दिया जिसने देश में जागृति उत्पन्न की। लोगों ने परतन्त्रता की हानियों को समझा और सत्यार्थप्रकाश में स्वराज्य व सुराज्य की प्रेरणा को ग्रहण व धारण किया। इसी का परिणाम स्वदेशी राज्य की स्थापना के लिये किये गये आन्दोलन थे। सभी आन्दोलनों के पीछे प्रेरणा का स्रोत सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द के कहे गये वचन ही प्रतीत होते हैं।

आर्यसमाज ने देश व समाज से अज्ञान, अन्धविश्वास तथा मिथ्या सामाजिक परम्पराओं को दूर कर ज्ञान विज्ञान से युक्त विचारों व सन्ध्या–यज्ञ आदि परम्पराओं के प्रचार–प्रसार में सर्वाधिक योगदान दिया है। विदेशी लोगों द्वारा आर्य हिन्दुओं का किया जाने वाला धर्मान्तरण भी रोका व उसे कम किया था। धर्मान्तिरित बन्धुओं को शुद्ध किया और जो वैदिक धर्म की श्रेष्ठता के कारण इसकी शरण में आना चाहते थे, उनको ग्रहण व धारण किया। आर्यसमाज आज भी प्रासंगिक है। इसका मुख्य कार्य वेद प्रचार द्वारा अज्ञान व अविद्या का निवारण तथा राष्ट्र विरोधी शक्तियों से देश को सावधान करना है। अतीत में आर्यसमाज ने अपना कार्य बहुत ही उत्तरदायित्व व विश्वसनीयता से किया। वर्तमान में आर्यसमाज कुछ शिथिल हो गया है। ईश्वर करे कि आर्यसमाज अपनी शिथिलिता दूर कर पुनः पूर्ववत् सक्रिय हो जाये और देश के सामने उपस्थिति चुनौतियां का सामना कर उन पर विजय प्राप्त करे। ईश्वर सभी देशवासियों को सद्बुद्धि प्रदान करें। हम आन्तरिक एवं विदेशी तत्वों जो सत्य–सनातन–वैदिक धर्म से वैर रखते हैं, से भ्रमित न हों। स्वार्थ व ऐषणाओं का त्याग करें और जो इनसे प्रभावित हैं उनसे दूर रहे व अपने बन्धुओं को सावधान करें। हम सब ऋषिभक्त मिलकर प्राचीन ऋषियों के अनुरूप देश व समाज का निर्माण करें। परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति व शक्ति है। उसका हमें जन–जन में प्रचार करना है। इसके लिए हम सत्यार्थप्रकाश को घर–घर पहुंचायें। सत्यार्थप्रकाश की महिमा महान् है। हम सत्यार्थप्रकाश का नियमित अध्ययन वा स्वाध्याय करें और दूसरों को प्रेरणा देते रहें, इस धर्म वा कर्तव्य पालन से हम पृथक न रहें। सत्यार्थप्रकाश एवं वेद के अध्ययनकर्ता किसी मत–मतान्तर के अध्येता से पराजित नहीं हो सकते। सत्यार्थप्रकाश का प्रचार सत्यधर्म प्रचार का मुख्य साधन है।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 644वां वेबिनार सम्पन्न

'आदर्श वैदिक राजतन्त्र' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सब योजनाएं कार्यक्रम सबके लिए समान हों—अतुल सहगल

शुक्रवार 17 मई 2024,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ''वैदिजीक आदर्श राजतन्त्र'' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 643 वां वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने विषय की भूमिका के रूप में कुछ तथ्य को विचार प्रस्तुत किये और विषय के प्रमुख बिंदु सामने रखे जो आज के सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। आज भारत में आम चुनाव का समय है और वातावरण राजनैतिक रोमांच से भरपूर है। इसी वर्तमान परिस्थिति के सन्दर्भ में आदर्श वैदिक राजतन्त्र की महत्ता को भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया ।किसी भी देश में सही और प्रभावशाली प्रशासन के लिए उसी प्रकार का राजतन्त्र आवश्यक है। आजकल कहा जा रहा है कि भारत का संविधान त्रुटिपूर्ण है और अनेक संशोधन मांगता है। उन्होंने इस बात को सही बताया ।कुछ राजनीतिक दल तो मतदाताओं को यह कहकर भयभीत कर रहे हैं कि उनके विरोधी दल सत्ता में आने पर संविधान बदल देंगे जिससे वर्ग विशेष को मिलने वाले लाभ समाप्त हो जायेंगे ।वक्ता ने कहा कि सही वैदिक प्रजातंत्र में देश के नागरिकों को लाभ पंहुचाने वाली सरकारी योजनायें व कार्यक्रम सब वर्गों के लिए एक समान होंगी और इसमें किसी प्रकार का पक्षपात न होगा। सरकारी तंत्र के अंतर्गत सब कार्य पूर्ण रूप से न्यायोचित और पक्षपात रहित हों ।मनुस्मृति में वर्णित आदर्श वैदिक प्रजातंत्र का ढांचा श्रोताओं के सामने रखा ।इसमें इसके दो महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत किया – एक राजनीतिक दल रहित चुनाव व्यवस्था और दूसरा चुने हुए प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का जनता को अधिकार ।यदि प्रतिनिधि भ्रष्ट आचरण में लिप्त पाया जाए व अपना कार्य कुशलतापूर्वक न करे तो जनता को उसे वापस बुलाने का अर्थात उसके चुनाव को रद्द करने का अधिकार हो ।उसके पश्चात् वक्ता ने तीन सशक्त सभाओं की बात कही जो आदर्श राजतन्त्र में अपेक्षित हैं ।यह हैं —राजार्यसभा, विद्यार्यसभा और धर्मार्यसभा ।मनुस्मृति में इंगित और महर्षि दयानन्द द्वारा उल्लेखित आदर्श राजतन्त्र के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं की भी वक्ता ने चर्चा की ।विश्व के अधिकांश देशों में प्रजातंत्र है लेकिन जहाँ राजतन्त्र उस देश की मौलिक संस्कृति और प्राचीन सामाजिक मूल्यों के अनुरूप हो वह देश उन्नति करता है ।वक्ता ने विश्व के अनेक देशों का हवाला देते हुए कहा कि भारत में संविधान और राजतंत्र—— दोनों ही भारतीय मूल वैदिक विचारधारा पर खरे नहीं उतरते हैं और संशोधन मांगते हैं ।वक्ता ने पुनः वर्तमान में भारत की राजनीतिक पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए भारत को विश्व का नैसर्गिक मार्गदर्शक व गुरु बतलाया ।भारत अपनी वैदिक विचारधारा की विरासत के अनुरूप अपना राजतन्त्र त्रुटिहीन करे और विश्व का मार्गदर्शन भी करे। मुख्य अतिथि आर्य नेता डॉ. गजराज सिंह आर्य व महेन्द्र नागपाल ने भी अपने विचार रखे। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'जननायक की विशेषता' पर गोष्ठी सम्पन्न

जननायक पक्षपात रहित होना चाहिए —प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक (एम वी एन विश्वविद्यालय)

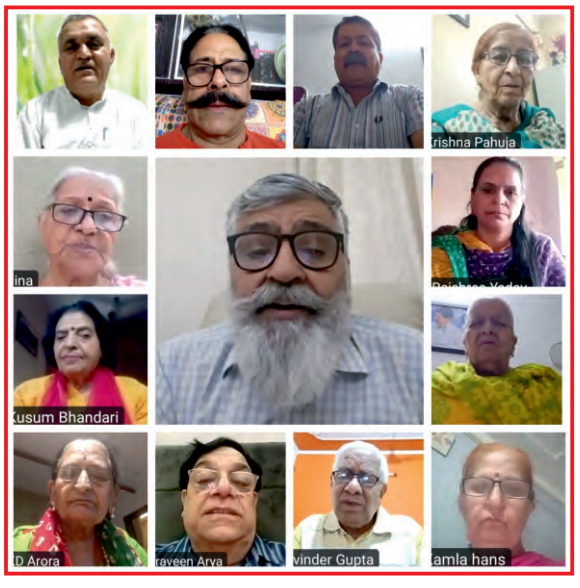

सोमवार 20 मई 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'जननायक की विशेषताय' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 644 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक ने सभी से मतदान करने का आह्वान करते हुए कहा कि यदि मतदान नहीं करते हैं तो बाद में हमें सरकार पर आक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं रहता है। लोकतंत्र में चुनाव एक पर्व की तरह हैं और हम सभी को बड़े उत्साह उमंग के साथ मतदान करना चाहिए। एक वेद मंत्र का उदाहरण देते हुए प्रो. नरेन्द्र आहूजा विवेक ने बताया कि हमारा जननायक ज्ञान के आलोक से प्रकाशित उच्चतम शिखर के समान हो, उसमें आसक्ति नहीं अनासक्ति का भाव हो वह ममत्व से नहीं समत्व से कार्य करें और समत्व से सर्वोदय की तरफ चलने वाला हो। वह सबका साथ सबका विश्वास सबका विकास विश्वास रखता हो। निर अभिमानता से सर्व हितकारी कार्य करने वाला हो। वह समृद्धि को बढ़ाने वाला और उसका रक्षक हो। सभी से मधुर न्यायशील व्यवहार करता हो। अग्नि के समान प्रदीप्त उर्धवगामी अग्रणी तेजस्वी हो। वह कवि के समान कोमल भावुक संवेदनशील चिंतक और मननशील हो। वह सभी से समान रूप से पक्षपात रहित व्यवहार करने वाला हो। हमारा जननायक विश्व समूह में ऊंचे आसन का पात्र हो। वर्तमान समय में केवल नरेंद्र मोदी ही इन गुणों वाले व्यक्तित्व दिखाई देते हैं। मुख्य अतिथि आर्य नेता ईश आर्य (हिसार) व अध्यक्ष स्वतंत्र कुकरेजा ने भी नेता के सर्वप्रिय गुणों पर प्रकाश डाला। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, कमला हंस, जनक अरोड़ा, ललिता धवन, कुसुम भंडारी राज श्री यादव आदि के मधुर भजन हुए।

फरीदाबाद शिविर समापन 8 जून को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद फरीदाबाद के तत्वावधान में **'विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' रविवार 2 जून से शनिवार 8 जून 2024** तक **सैनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भारत कॉलोनी, सेक्टर 87, फरीदाबाद** में आयोजित किया जा रहा है। शिविर समापन समारोह शनिवार 8 जून को शाम 5.00 बजे होगा। आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

—डॉ. वीरेंद्र योगाचार्य, प्रान्तीय महामंत्री (9350615369)

जम्मू शिविर समापन 16 जून को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में **'विशाल आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर' रविवार 9 जून से रविवार 16 जून 2024** तक **आर्य समाज जानीपूर कॉलोनी, जम्मू** में आयोजित किया जा रहा है। **समापन समारोह रविवार 16 जून को प्रातः 10 से 1.00 बजे तक होगा।** आप सपरिवार सादर आमंत्रित है। दिल्ली से राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई जी एवं धर्मपाल आर्य जी पहुंच रहे हैं।

—सुभाष बब्बर, प्रान्तीय अध्यक्ष (9419301915)

स्वामी दीक्षानन्द जी का 21वां स्मृति दिवस सम्पन्न

यज्ञ व वेदों के प्रचार वाहक रहे स्वामी दीक्षानन्द –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार 16,मई 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में वेदों के प्रकाण्ड विद्वान,महान आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानंद सरस्वती का 21 वाँ स्मृति दिवस ऑनलाइन मनाया गया। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज के दिग्गज विद्वान साहिबाबाद स्थित समर्पण शोध संस्थान के संस्थापक रहे व अनेकों वैदिक साहित्य का प्रकाशन किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी दीक्षानंद जी धीर, गम्भीर,सौम्य व वैदिक सिद्धान्तों के मनीषी थे,उनके 21 वें स्मृति दिवस पर उन्हें याद करने का अर्थ है कि हम उनके बताये रास्ते का अनुसरण करें।आज वेदों के रास्ते पर चलकर ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।स्वामी दीक्षानंद जी का व्यक्तित्व अद्भूत था उन्हें देखते ही पुरातन काल के ऋषि की याद आ जाती थी।उनका पूरा जीवन यज्ञ व वेदों के प्रचार प्रसार पर ही रहा। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें वेदों का महान प्रसारक बताया, उन्होंने कहा कि आर्य जगत में बड़े बड़े बहुकुण्डीय यज्ञों की शुरुआत स्वामी दीक्षानंद जी ने ही कि थी।उनका सम्पूर्ण जीवन समाज व राष्ट्र को लंबे समय तक मार्ग प्रशस्त करता रहेगा,आर्य युवाओं को उनसे विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए। आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि स्वामी दीक्षानंद जी ने अपना पूरा जीवन यज्ञ,महर्षि दयानंद व वेदों के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया।उनका विराट सौम्य व्यक्तित्व पहली बार में ही सबको अपना बना लेता था। आर्य नेता कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि स्वामी जी के निराले व्यक्तित्व से सभी प्रभावित हो जाते थे। प्रमुख रूप से सुरेश आर्य, धर्मपाल आर्य,पिंकी आर्य, देवेन्द्र भगत, दुर्गेश आर्य, ओम सपरा, आस्था आर्य, डॉ. आर के आर्य आदि ने भी उनके कार्यो को स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिषद के 46 वे स्थापना दिवस पर बधाई

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की स्थापना 3 जून 1978 को आर्य समाज हडसन लाइन, गुरु तेग बहादुर नगर दिल्ली में श्री अनिल आर्य ने की थी। अब 3 जून 2024 को 46 वे स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई –महेन्द्र भाई, महामंत्री

Watch Live Telecast-

Watch KAYP Arya Youth Camp on our Youtube Channel LIVE from Amity School, Noida every day from 11 am to 1:00 pm from 02 June to 09 June 2024, and take benefit of various lectures and workshops by dignified Vedic Scholars and educationists.

Watch Innaugration Ceremony on Saturday, 1 June 2024 from 5 to 7pm.

Link- https://youtube.com/@aryayuvakparishad newdelhi5599

Anil Arya, Convenor, 9868051444

पुष्पा व सुरेन्द्र शास्त्री को बधाई

श्रीमती पुष्पा व श्री सुरेन्द्र शास्त्री जी को उनकी 50वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं।

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका "युवा उद्घोष" को नियमित बनाये रखने के लिये केवल 100/– रू का सहयोग "युवा उदघोष, A/NO. 20024363377, IFSCode. MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेजें।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970